USHA KUMARI
Guest Asstt Professor,
Deptt. of Economics,
Vaishali Mahila College, Hajipur

करापात और कर-विवर्तन (Incidence and Shifting of a Tax)

करापात के अन्तर्गत यह अध्ययन किया जाता है कि कर की राशि का भुगतान वास्तव में कौन करता है। इसके विपरीत कराघात से करापात की स्थिति तक पहुँचाने की क्रिया को कर-विवर्तन (Shifting of Taxation) कहते हैं। अर्थात् कर-विवर्तन वह विधि है जिसके अन्तर्गत कर का भार एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति पर हस्तान्तरित किया जाता है। यदि विवर्तन नहीं होगा तो ऐसी स्थिति में कराघात व करापात दोनों एक ही व्यक्ति पर पड़ेंगे। कराघात का विवर्तन नहीं होता जबकि करापात का विवर्तन होता है।

करापात का महत्व (Importance of Incidence)

वर्तमान युग में करापात (कर-भार) का अत्यधिक महत्व है। करारोपण का लक्ष्य केवल राज्य के चलाने के लिए धन का एकत्रीकरण ही नहीं है वरन् आय और धन की विषमताओं को दूर करना भी है। करों का भार न्यायपूर्ण हो इस पर ही कर-प्रणाली की सार्थकता निर्भर करती है। कर-भार (करापात) के सिद्धांत में कर-विवर्तन एक महत्वपूर्ण अन्तर्निहित तत्व है। इसप्रकार, सरकार कर-विवर्तन की सीमाओं को ध्यान में रखकर ही करारोपण के सिद्धांतों को व्यावहारिक बना सकती है।

डाल्टन के अनुसार, "प्रत्येक कर के बड़े आर्थिक प्रभाव होते हैं और प्रश्न यह है कि क्या हम करापात की विशिष्ट समस्या को प्रभावों की अधिक सामान्य समस्या से अलग कर सकते हैं या करना चाहिए।"

इसप्रकार, डाल्टन ने करों के प्रभाव से भी अधिक महत्वपूर्ण कर-भार की समस्या को माना है। लेकिन कर-भार का अध्ययन करना सरल नहीं है जितना कि इसका प्रायः वर्णन आकलन किया जाता है। कारण कि —

(i) मूल्यों में निरन्तर उच्चावचन होने से कर-भार का वास्तविक

आकलन कर पाना कठिन हो जाता है।
(ii) कर-भार एवं कर प्रभावों में भेद करना कठिन हो जाता है।
(iii) कर-भार का अध्ययन अपेक्षित होता है जिसे विशेष अध्ययन के पश्चात ही ज्ञात किया जा सकता है।

इसप्रकार कर-भार (करापात) का अध्ययन करने से यह आवश्यक नहीं कि कर-प्रणाली न्यायपूर्ण हो जाये, लेकिन वास्तव में इसके अध्ययन से करारोपण को अधिक न्यायपूर्ण एवं प्रभावोत्पादक बनाने की दिशा में सहायता अवश्य मिल सकती है।

प्रो० मसग्रेव ने करापात की नवीन अवधारणा को विकसित किया है। उनके अनुसार करापात तीन प्रकार के होते हैं—

(i) विशिष्ट करापात :

विभिन्न करों और सार्वजनिक व्यय को स्थिर रखने की स्थिति में किसी एक कर में परिवर्तन से निजी उपभोग के लिए उपलब्ध वास्तविक आय पर होने वाले वितरणात्मक प्रभाव को विशिष्ट करापात कहते हैं।

(ii) भेदात्मक करापात :

भेदात्मक करापात से आय वितरण के ऐसे परिवर्तन पाये जाते हैं जो उस व्यवस्था से उत्पन्न होते हैं जब समान आय देने वाला एक कर किसी दूसरे कर की जगह ले लेता है।

(iii) संतुलित बजट करापात :

इसके अन्तर्गत वितरण के उस परिवर्तन को ज्ञात किया जाता है जो करों और सार्वजनिक व्ययों को एक समान मात्रा तक बढ़ाने या घटाने से उत्पन्न होता है।

करापात के सिद्धांत

करापात के सिद्धांतों में तीन सिद्धांत महत्वपूर्ण हैं—
(1) कर का एकत्रीकरण सिद्धांत (Concentration Theory)
(2) कर का विकेन्द्रीकरण सिद्धांत (Diffusion Theory)
(3) कर का आधुनिक सिद्धांत (Modern Theory)

Scanned with CamScanner

(1) **केन्द्रीकरण अथवा संकेन्द्रण सिद्धांत (Concentration Theory)** का प्रतिपादन फ्रांस में अहस्तक्षेप नीति का अनुसरण करने वाले अर्थशास्त्रियों, प्रकृतिवादी तथा परम्परावादी अर्थशास्त्रियों द्वारा किया गया। इनके अनुसार अतिरेक प्राप्त करने वाला वर्ग ही कर-भार वहन कर सकता है अर्थात् कर विवर्तन ऐसे वर्ग की ओर होना चाहिए।

(2) **विकेन्द्रीकरण अथवा प्रसारण सिद्धांत (Diffusion Theory)** का प्रतिपादन फ्रांसीसी अर्थशास्त्री केनार्ड (Canard) ने किया है। इसका अभिप्राय यह है कि अर्थव्यवस्था में कहीं भी लगाये गये कर का भार धीरे-धीरे पूरे समाज में फैल जाता है। केनार्ड के अनुसार, "यदि किसी व्यक्ति की एक धमनी से रक्त निकाला जाये तो रक्त की कमी केवल उस धमनी में नहीं होगी अपितु सम्पूर्ण शरीर में रक्त अल्पता महसूस होगी।"

(3) **आधुनिक सिद्धांत (Modern Theory)**

आधुनिक सिद्धांत के अनुसार कर उत्पादन लागत का एक अंग है। जिस प्रकार श्रमिकों एवं पूँजीपतियों को मजदूरी तथा ब्याज दिया जाता है, उसी प्रकार सरकार को कर दिया जाता है।

अतः वस्तु का मूल्य इतना अवश्य होना चाहिए कि कर की राशि का भुगतान हो सके। यदि वर्तमान मूल्यों से कर का भुगतान किया जा सकता है तो आशय यह हुआ कि वर्तमान मूल्यों पर ही अतिरेक मिल रहा है। यदि कर का भुगतान वर्तमान मूल्य से नहीं हो सकता है तो ऐसी परिस्थिति में मूल्य का बढ़ना उस समय तक चालू रहेगा जब तक कि कर का भुगतान पूरा-पूरा न हो सके। यदि मूल्य में थोड़ी सी वृद्धि होती है तो कर का कुछ अंश क्रेता वहन करेगा और शेष अंश विक्रेता करेंगे। इस प्रकार कर-विवर्तन उसी समय संभव हो सकता है जबकि विनिमय कार्य होते हैं। कर भार क्रेता और विक्रेता पर कितना पड़ेगा, यह कई बातों पर निर्भर करता है।

Scanned with CamScanner